Date : 07.02.2026

1. संसाधन एवं विकास

★ संसाधन → हमारे लिए उपयोगी सभी चीजें संसाधन हैं।

संसाधन के प्रकार → (i) प्राकृतिक संसाधन
(ii) मानव निर्मित संसाधन
(iii) मानव संसाधन

★ प्राकृतिक संसाधन

• उत्पति के आधार पर → (i) जैव
(ii) अजैव

(i) जैव → वह पदार्थ जो वर्तमान में जीवित हो या पहले कभी जीवित था, उसे जैव कहते हैं।
e.g:— पेड़, लकड़ी, कुर्सी, मुरब्बा, पनीर एवं कोयला आदि।

(ii) अजैव → वह पदार्थ जो वर्तमान में निर्जीव हो और पहले भी निर्जीव था, उसे अजैव कहते हैं।

• समाप्यता के आधार पर संसाधन के प्रकार :— 2 ★

(i) नवीकरणीय योग्य संसाधन
» ऐसे संसाधन जिसके समाप्त होने बाद, फिर से प्राप्त किया जा सकता है या जो जल्दी समाप्त हो नहीं होगा, उसे नवीकरणीय संसाधन कहते हैं। #
e.g:— हवा, पानी, सूर्य प्रकाश आदि

Date :

(ii) अनवीकरणीय योग्य संसाधन

→ ऐसे संसाधन जिसके समाप्त होने के बाद फिर से प्राप्त नहीं कि जा सकता है या जो जल्दी समाप्त हो जाएगा, उसे अनवीकरणी संसाधन कहते हैं।

e.g:- कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि।

• स्वामित्व के आधार पर संसाधन के प्रकार :- 4

(i) व्यक्तिगत संसाधन → घर, बाइक, बर्तन, ज्वेलरी आदि।
(ii) सामुदायिक संसाधन → खेल-मैदान, तालाब, कुँआ आदि।
(iii) राष्ट्रीय संसाधन → सड़क, रेलवे, स्कूल आदि।
(iv) अंतर्राष्ट्रीय संसाधन → 200 मील के बाद की समुद्र, ध्रुव

• विकास के आधार पर संसाधन के प्रकार :- 4

(i) संभावी संसाधन → राजस्थान और गुजरात में सौर उर्जा
(ii) विकसित संसाधन → झारखण्ड का कोयला
(iii) भंडार → N_2 का उपयोग
(iv) संचित कोष → जल भंडार, कोयला का सुरक्षित क्षेत्र

★ सतत पोषणीय विकास

→ ऐसा विकास जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना किया जाता है एवं ध्यान रखा जाता है कि आने वाली पीढ़ी को कोई नुकसान हो, उसे सतत पोषणीय विकास कहा जाता है।

e.g:- सौर ऊर्जा का उपयोग, जल विद्युत ग्रह का स्थापना

रियो डी जेनेरो पृथ्वी सम्मेलन, 1992

★ स्थान → रियो डी जेनेरो (ब्राजील)

★ वर्ष → 1992

★ इस सम्मेलन में विश्व के 100 देशों ने भाग लिये थे।

★ यह विश्व का प्रथम पृथ्वी सम्मेलन था।

★ प्रथम पृथ्वी सम्मेलन में भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन एवं जैविक विविधता पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए।

★ सतत पोषणीय विकास के लिए एजेंडा -21 को स्वीकृत किया गया।

★ एजेंडा -21 में विश्व सहयोग द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटान के लिए सहमति था।

भू- संसाधन

★ भूमि को तीन मुख्य वर्गों में बाँटा गया है :-
(i) मैदान
(ii) पठार
(iii) पर्वत

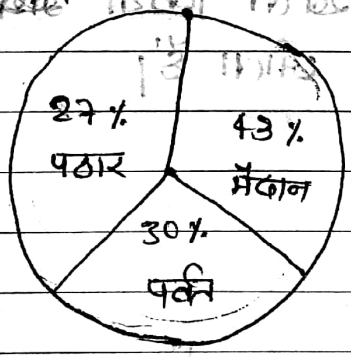

★ उपयोग के आधार पर भूमि का वर्गीकरण

1. वन
2. गैर कृषि

Date :

ⓐ बंजर भूमि ⇒ जहाँ कृषि नहीं होती है और न ही कोई वनस्पति उगते हैं।

ⓑ अन्य उपयोगिता भूमि ⇒ सड़क, मकान, बाजार आदि।

3. परती

(a) परती भूमि

ⓐ वर्तमान परती ⇒ जहाँ एक साल या इसके कम समय में खेती न किया गया हो।

ⓑ अतिरिक्त परती ⇒ जहाँ 1 से 5 वर्ष तक खेती न किया गया हो।

4. भूमि का अन्य उपयोग :-

ⓐ चारागाह

ⓑ बागवानी

5. शुद्ध बोया गया क्षेत्र

⇒ जिस क्षेत्र पर वर्षों से खेती किया जा रहा है एवं सभी ऋतु में फसल लगाया जाता है।

मृदा - संसाधन

☆ मृदा की निर्माण चट्टानों से होता है, जिसे बनने में सूर्य-प्रकाश, पानी, हवा आदि मदद करते हैं।

☆ मृदा के विभिन्न घटक जैसे तत्त्व, रासायनिक पदार्थ आयु आदि उसे विशेष गुण प्रदान करता है।

Scanned with OKEN Scanner

Date :

☆ मृदा के प्रमुख प्रकार

(i) जलोढ़ मृदा
(ii) काली मृदा
(iii) लेटराइट मृदा
(iv) लाल और पीली मृदा
(v) मरूस्थली मृदा
(vi) वन मृदा

(i) जलोढ़ मृदा

→ जलोढ़ मृदा देश की सबसे महत्त्वपूर्ण मृदा है।

→ यह मृदा सबसे उपजाऊ मृदा है।

→ जलोढ़ मृदा सिंधु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदी के निक्षेप से बना है।

→ जलोढ़ मृदा पूर्वी तटीय मैदान में भी पाए जाते हैं।

→ जलोढ़ मृदा राजस्थान और गुजरात के कुछ क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं।

→ जलोढ़ मृदा को आयु के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है।

(a) खादर → नया जलोढ़
मोटा कण
अधिक उपजाऊ

(b) बांगर → पुराना जलोढ़
महीन कण
कम उपजाऊ

22/03/24

Date :

★ जलोढ़ मृदा गन्ना, चावल, गेहूँ, दलहन आदि फसलों के लिए उपयुक्त हैं।

★ जलोढ़ मृदा में गहन कृषि की जाती है एवं यह धनी उपजाऊ पाए जाते हैं।

★ जलोढ़ मृदा क्षेत्र ⇒ पंजाब, हरियाणा, U.P, बिहार, W.B, गुजरात, असम एवं पूर्वी तटीय मैदान

(ii) काली मृदा

★ काली मृदा को रेगर या रेगुर मृदा भी कहा जाता है।

★ काली मृदा कपास के लिए अधिक उपजाऊ होती है।

★ काली मृदा महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, म. प्र. और छत्तीसगढ़ के पठार में पाए जाते हैं।

★ काली मृदा बहुत महीन कणों से बनी हैं।

★ गर्मी और शुष्क मौसम में इस मृदा में दरार पड़ जाता है।

★ काली मृदा को वर्षा ऋतु में जोता जाता है।

(iii) लेटराइट मृदा

★ लेटराइट मृदा भारी वर्षा के निक्षालन से बना है।

★ लेटराइट मृदा अधिक अम्लीय होता है।

Date :

☆ लेटराइट मृदा में पोषक तत्वों की कमी होती हैं।

☆ लेटराइट मृदा काजू की फसल के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

☆ लेटराइट मृदा में पर्णपाती और सदाबहार वन मिलते हैं।

☆ लेटराइट मृदा में केरल और तमिलनाडु में चाय और कॉफी उगाई जाती हैं।

(iv) लाल और पीली मृदा

☆ लाल मृदा का निर्माण आग्नेय चट्टानों पर कम वर्षा वाले क्षेत्र में हुआ हैं।

☆ लाल मृदा लौह धातु के कारण लाल दिखाई देता हैं।

☆ लाल मृदा का जलयोजन के कारण पीला मृदा बन जाता है

☆ लाल और पीली मृदा उड़ीसा, छत्तीसगढ़ एवं गंगा के दक्षिण मैदान में पाए जाते हैं।

(v) मरूस्थलीय मृदा

☆ मरूस्थलीय मृदा का रंग लाल और भूरा होता हैं।

☆ ये मृदा रेतीली एवं लवणीय होता हैं।

☆ शुष्क जलवायु के कारण इस मृदा में नमी एवं ह्यूमस की मात्रा बहुत कम होती हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Date :

★ इस मृदा के नीचे कैल्सियम की मात्रा अधिक होती है, जिस कारण यहाँ चूना पत्थर पाए जाते हैं।

★ इस मृदा को सिंचित करके कृषि योग्य बनाया जा सकता

वन मृदा

★ वन मृदा पहाड़ी क्षेत्रों में पायी जाती है जहाँ पर्याप्त वर्षा होती हैं।

★ इन मृदाओं का गठन में पर्वतीय पर्यावरण के अनुसार बदलाव आते हैं।

★ इन मृदाओं का अत्यधिक अपरदन होता है एवं प्रकृति में अम्लीय हो जाता हैं।

★ मृदा - अपरदन ⇒ मानवीय या प्राकृतिक कारणों से मृदा का कटकर दूसरे जगह जाना मृदा अपरदन कहलाता हैं।

★ मृदा - अपरदन का मुख्य कारण हवा एवं पानी हैं।

★ सर्वाधिक मृदा - अपरदन वर्षा से होती हैं।

★ मानवीय कारण में ~~खनन~~ होआता है जिस कारण मृदा अपरदन होता हैं।

★ घास - पैड़ - पौधे लगाकर वर्षा एवं हवा से होने वाला मृदा अपरदन को रोका जा सकता हैं।

Date :

☆ भूमि-निम्नीकरण → यदि प्रकृति या मानवीय कारणों से मृदा की गुणवत्ता में कमी आती है, या मृदा की उपजाऊ घट जाता है उसे भूमि-निम्नीकरण कहा जाता है।

e.g:- पंजाब में अत्यधिक सिंचाई के कारण भूमि निम्नीकरण हुआ है।

मृदा – संरक्षण

☆ मृदा को प्रदूषण, अपर दन या निम्नीकरण से बचाना ही मृदा संरक्षण कहलाता है।

☆ मृदा संरक्षण के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:-

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न

(i) पंजाब में भूमि निम्नीकरण का निम्नलिखित में से मुख्य कारण क्या है?

Ans (ख) अधिक सिंचाई

(ii) निम्नलिखित में से किस प्रांत में सीढ़ीदार (सोपानी) खेती की जाती है?

Ans (घ) उत्तराखण्ड।

Scanned with OKEN Scanner

Date :

(iii) इनमें से किस राज्य में काली मृदा मुख्य रूप से पाई जाती है?

Ans (ग) महाराष्ट्र

(i) तीन राज्यों के नाम बताएँ जहाँ काली मृदा पाई जाती है। इस पर मुख्य रूप से कौन-सी फसल उगाई जाती है।

Ans काली मृदा महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों में पाई जाती है। यह मिट्टी में बहुत उपजाऊ होती है। और इसमें नमी को लंबे समय तक बनाए रखने की क्षमता होती है। इस कारण इसमें मुख्य रूप से कपास की खेती की जाती है इसके अलावे ज्वार और गन्ना भी उगाए जाते हैं।

(ii) पूर्वी तट के नदी डेल्टाओं पर किस प्रकार की मृदा पाई जाती है? इस प्रकार की मृदा की तीन मुख्य विशेषताएँ क्या है?

Ans नदी घाटियों में मुख्यत: जलोढ़ मृदा पाई जाती है, जो नदी द्वारा लाई गई होती है। यह मिट्टी बहुत उपजाई होती है, इसमें पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते है और जल धारण क्षमता अच्छी होती है। इस मिट्टी में धान, गेहूँ जैसी फसले आसानी से उगाई जाती है।

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन को रोकने के लिए कई उपाय किए जाते हैं।

(iii) पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन को रोकथाम के लिए क्या कदम उठाए गए?

Ans पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा अपरदन को रोकने के लिए कई उपाय किए जाते है। जैसे :- सीढ़ीनुमा खेती, वृक्षारोपण (पेड़ लगाना) और घास उगाना, ये उपाय मिट्टी को बहने से रोकता है। और भूमि की उर्वरता को बनाए रखते हैं।

Date :

2. वन एवं वन्य जीव संसाधन

☆ पृथ्वी पर सूक्ष्मजीव से लेकर हाथी तक लाखों प्रकार के जीव रहते हैं।

☆ जैव विविधता → जिस स्थान पर विभिन्न प्रकार के जीव एक साथ रहते हैं एवं पर्यावरण को संतुलित रखते हैं, उसे जैव-विविधता कहते हैं।

☆ पर्यावरण में रहने वाले जीव एवं पेड़-पौधे एक-दूसरे को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करते हैं।

भारत में वनस्पतिजात एवं प्राणिजात

☆ भारत जैव-विविधता में समृद्ध देश है।

☆ भारत में लगभग विश्व की 8% (16 लाख) जैव उपजातियाँ पायी जाती हैं।

☆ भारत में लगभग 40 लाख प्रकार के वनस्पतियाँ पायी जाती हैं।

भारत में वन एवं वन्य जीवों का संरक्षण

☆ वर्तमान में कई सारी समस्या के कारण एवं वन्य जीवों का ह्रास हो रहा है।

☆ वन एवं वन्य जीवों की संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं।

☆ भारतीय वन्यजीव अधिनियम 1972 में लागू किया गया।

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय वन्यजीव अधिनियम -1972 में निम्न मुख्य प्रावधान कि

☆ रक्षित प्रजातियां की सूची प्रकाशित किया।

(i) शिकार पर प्रतिबंध लगाया।

(ii) जंगली व्यापार पर रोक लगायी गई।

(iii) राष्ट्रीय उद्यान एवं पक्षीविहार स्थापित की गई।

(iv) रक्षण अवश्यक वाले जीवों को रक्षित किया गया।

(v)

☆ निम्न विशेष प्राणियों को सरकार द्वारा रक्षण प्रदान की गई।

→ बाघ

→ एक सींग वाला गैंडा

→ कश्मीरी हिरण

→ मगरमच्छ (तीन प्रकार के - स्वच्छ जल मगरमच्छ, लवणीय एवं घड़ियाल)

→ एशियाई शेर

→ भारतीय हाथी

→ काला हिरण

→ चिंकारा

आदि

प्रोजेक्ट टाइगर (बाघ परियोजना)

☆ 20वीं सदी में बाघों की अनुमानित संख्या 55,000 से घटकर 1,827 हो गई थी।

☆ बाघों को मारकर व्यापार किया जाता था।

☆ बाघों की संरक्षण के लिए 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत किया गया। जिससे बाघों की संख्या में वृद्धि हुई।

Scanned with OKEN Scanner

Date : _____

☆ प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत ही उत्तराखण्ड की कॉरबेट राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना हुई।

☆ 1988 से 1996 के तहत सैकड़ों तितलियों, पतंगों, मृगों आदि को संरक्षित जातियों में शामिल किया गया था।

वनों का वितरण

☆ सरकार द्वारा वनों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

(i) आरक्षित वन
(ii) रक्षित वन
(iii) अवर्गीकृत वन

i) आरक्षित वन → वैसे वन जिसे सरकार द्वारा आरक्षित किया गया हो, उसे आरक्षित वन कहते हैं। आरक्षित वन की संपदा सबसे ज्यादा कीमती होती है देश में आधे से ज्यादा आरक्षित वन हैं।

ii) रक्षित वन → वैसे वन जिसे वन-विभाग द्वारा रक्षा प्रदान किया जाता है, उसे रक्षित वन कहा जाता है। देश में एक-तिहाई रक्षित वन हैं।

iii) अवर्गीकृत वन → वैसे वन जो किसी निजी व्यक्ति संस्था या समाज के स्वामित्व (मालिक) में है, उसे अवर्गीकृत वन कहा जाता है।

☆ सर्वाधिक वन वाला राज्य M.P है।

Scanned with OKEN Scanner

Date :

☆ भारत में कुछ वन ऐसे हैं जिसका संरक्षण वहाँ के समुद
के हाथों में है ये समुदाय इस वनों पर सरकारी नियम लागू
होने नहीं देते हैं।

☆ राजस्थान के अलवर जिले में 5 गाँवों के लोगों ने 1200
हेक्टेयर वन भूरेदेव डाकव 'सोचुरी' घोषित कर दिय
है जहाँ अपना ही कानून लागू करता है।

☆ कुछ समाज विशेष पेड़ों को पूजते हैं, उसका धार्मिक
मान्यता होता है। लेकिन इससे पर्यावरण संरक्षण होता है

☆ छोटानागपुर क्षेत्र में मुंडा और संथाली जनजाति महुआ
और कदंब के पेड़ों की पूजा करते हैं।

☆ ओड़िशा एवं बिहार की जनजातियाँ शादी के दौरान
आम एवं इमली की पेड़ों की पूजा करते हैं।

☆ अधिकार मानव समाज पीपल एवं बरगद की पेड़ों को
पवित्र मानते हैं।

☆ भारतीय समाज में कई ऐसी संस्कृतियाँ है, जो पर्यावरण
की संरक्षण से जुड़ा हैं।

☆ राजस्थान के विश्नोई गाँव के आस-पास काला हिरण,
चिंकारा, नीलगाय एवं मोरों के झुंड निवास करते हैं।

☆ विश्नोई समाज - प्रकृति को अपना अभिन्न अंग मानते है

Date :

i) चिपको आन्दोलन

→ यह आन्दोलन पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए हिमालय के क्षेत्रों में आरंभ किया गया था।

→ इसका शुरुआत 1970 में सुंदरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में हुआ था।

→ इस आन्दोलन के दौरान पेड़ को बचाने के लिए महिलाऐं पेड़ से चिपक जाती थी।

ii) बीज बचाओ आन्दोलन एवं नवदान्य आन्दोलन

→ यह आन्दोलन टिहरी के किसानों के द्वारा चलाया गया था।

→ इस आन्दोलन का उद्देश्य खेतो में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग रोकने का था।

Q 1. इनमें से कौन-सा संरक्षण तरीका समुदायों की सीधी भागीदारी नहीं करता?

Ans. (घ) वन्य जीव पशुविहार का परिसीमन

Q 2. Ans. आरक्षित वन - वन और वन्य जीव संसाधन संरक्षण की दृष्टि से सर्वाधिक मूल्यवान वन।

रक्षित वन - वन भूमि जो और अधिक क्षरण से बचाई जाती हैं।

अवर्गीकृत वन - सरकार, व्यक्तियों के निजी और समुदायों के अधीन अन्य वन और बंजर भूमि।

Scanned with OKEN Scanner

Date :

3(i) जैव विविधता क्या है? यह मानव जीवन के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है?

Ans. जैव विविधता पृथ्वी पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों (पौधों, जंतुओं और सूक्ष्मजीवों) की विविधता को कहते हैं। यह मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मानव एक जटिल पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा है, जिसमें हर जीव एक-दूसरे पर निर्भर है। (ऑक्सीजन, भोजन और पानी के लिए)।

4(ii) वन और वन्य जीव संरक्षण में सहयोगी रीति-रिवाजों पर एक निबंध लिखिए।

Ans. भारतीय संस्कृति में प्रकृति की पूजा एक पुरानी परंपरा है। कई समुदायों में पीपल, बरगद और महुआ जैसे पेड़ों को पवित्र मानकर पूजा जाता है, जिससे उनकी सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसी तरह तुलसी का पौधा लगभग हर घर में मिलता है। त्योहारों पर नदियों, पहाड़ों और पशुओं (गाय, नाग) की पूजा करना प्रकृति से प्रति सम्मान दर्शाता है।